International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-01-2024, Accepted: 18-02-2024, Published: 13-03-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 7-9

सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृतिवाद का प्रभाव

बिजय कुमार पधान
शोधार्थी, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात, भारत

सारांश
आधुनिक हिंदी कविता में साहित्य एवं दर्शन के अंतः संबंध का वर्णन द्रष्टव्य है। कविता किसी निश्चित युग की होने के कारण उसमें उस युग के दर्शन का प्रभाव होना स्वाभाविक बात है। प्रकृतिवाद एक ऐसा दर्शन है जिसका मूल आधार प्रकृति है। इस पाश्चात्य दर्शन का जन्म 18वीं सदी में जीन जैक्स रूसो के द्वारा हुआ था, जिसका भारतीय संस्करण रूप 19वीं सदी में रवींद्रनाथ टैगोर ने प्रस्तुत किया था। रूसो एवं टैगोर दोनों के प्रकृतिवाद में भिन्नता पाई जाती है। हिंदी साहित्य के छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की प्रारंभिक कविताओं में इस प्रकृतिवाद का प्रभाव देखने को मिलता है। रूसो का प्रकृतिवाद एक पाश्चात्य सिद्धांत था जिसका मूलाधार प्रकृति में भौतिक शक्ति का चित्रण था लेकिन टैगोर का सिद्धांत पूर्णतः भारतीय था, जिसमें प्रकृतिवाद और आदर्शवाद का समन्वय निहित है। दोनों प्रकृति को ज्ञान का मूल स्रोत मानकर उसकी गोद में प्राप्त शिक्षा पर अपना दर्शन स्थापित किया है। ठीक इसी तरह पंत ने प्रकृति को शिक्षिका मानी है। प्रकृति से प्राप्त शिक्षा को उन्होंने अपनी कविताओं में वर्णन किया है। पंत की कविता भारतीय दर्शन से प्रभावित रवींद्रनाथ टैगोर का प्रकृतिवाद के ज्यादा करीब है; क्योंकि जहां टैगोर का दर्शन उस निर्दिष्ट युग में विद्यमान विचार–श्रृंखला का ज्ञात करवाता है, वहां पंत ने उस श्रृंखला को अपने काव्य में समुचित स्थान दिया है।

मूल शब्दः प्रकृतिवाद, अध्यात्मवाद, भौतिक जगत, रहस्यवाद, अरविंद दर्शन, मानस, अतिमानस

प्रकृतिवाद मूलतः शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखित एक दर्शन है, जिसका सर्वप्रथम उल्लेख रूसो ने अपनी पुस्तक एमील में किया था। उन्होंने एमील में कहा है कि ''यहां प्रत्येक वस्तु प्रकृति के नियंता से अच्छे रूप में आती है, मनुष्य के संपर्क से ही दृष्टि प्राप्त होती है।''[1] यहां रूसो भौतिक प्रकृति को प्रधानता देते हुए उसमें सामाजिक परंपरा के समावेश को अस्वीकार करते हैं। वे मनुष्य की शिक्षा को सीधे भौतिक प्रकृति के साथ जोड़ते हैं। उक्त विचार के संदर्भ में थामस एवं लैंग के अनुसार ''प्रकृतिवाद आदर्शवाद के विपरीत मन को पदार्थ के अधीन मानता है और यह विश्वास करता है कि अंतिम वास्तविकता भौतिक है, आध्यात्मिक नहीं।''[2] प्रकृतिवाद भले ही अध्यात्मवाद एवं आर्दशवाद का विरोध करता है, लेकिन टैगोर का प्रकृतिवाद भारतीय अध्यात्मवाद और आदर्शवाद से प्रभावित था। उसके साथ आध्यात्मिकता को जोड़ कर टैगोर ने वर्तमान को सहारा है। इसका प्रभाव हम पंत की कविताओं पर देखते हैं। टैगोर प्रकृतिवाद को एक शक्ति के रूप में स्वीकार करते थे अर्थात् मनुष्य के विकास के लिए प्राकृतिक सरंचना को मुख्य आधार माना है। रवींद्रनाथ के प्रकृतिवाद की यह शक्ति पंत के काव्य में रहस्यवाद का रूप धारण करता है। इसी प्रकार टैगोर और पंत दोनों ने प्रकृति में मानव एकता और निराकार ब्रह्म का दर्शन करके अपने काव्य का सृजन किया है, चाहे वह टैगोर की 'गीतांजलि' हो या पंत के काव्य संग्रह 'वीणा', 'ग्रंथि' या 'पल्लव'। उत्तरा की प्रस्तावना में कवि ने खुद यह कहा है कि ''वीणा, पल्लव काल में मुझ पर कवींद्र तथा स्वामी विवेकानंद का प्रभाव रहा है।''[3]

अध्ययन का उद्देश्य

उक्त आलेख का मुख्य उद्देश्य रूसो और टैगोर के द्वारा शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में दिया गया प्रकृतिवाद दर्शन का हिंदी साहित्य के सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रभाव का निरूपण करना है। साहित्य एवं दर्शन एक सिक्के के दो पहलू जैसे हैं। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। इसलिए पंत की प्रारंभिक कविताएं टैगोर की प्रकृतिवादी सोच के ज्यादा करीब नज़र आती हैं। अतः यहां पंत की कविताओं के माध्यम से साहित्य एवं दर्शन के अंतः संबंध को भी देख सकते हैं।

साहित्यावलोकन

पंत की कविताओं पर अनेक लेखकों द्वारा पूर्व में कार्य किया जा चुका है। उन सब में छायावाद के सन्दर्भ में पंत के काव्य का प्राकृतिक चित्रण को व्याख्यायित किया गया है। इसके अलावा अगर दर्शन की बात करें तो उनके काव्यों में अरविंद दर्शन तथा गांधी के विचारों से सबंधित कार्य भी हुए हैं। परंतु प्रकृतिवाद दर्शन के परिप्रेक्ष्य में पंत की कविताओं का विश्लेषण की ओर विद्वानों का ध्यान नहीं गया था। वस्तुतः उक्त आलेख में पंत की प्रकृतिवादी दृष्टि को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य पाठ

टैगोर एवं रूसो के प्रकृतिवाद में भिन्नता पाई जाती है। टैगोर का प्रकृतिवाद समाज एवं प्रकृति के बीच नवीन रूप में संबंध बनाने की आकांक्षी है। दोनों ने 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा लगाया था। मनुष्य समाज को प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करने की सलाह दी थी। छायावादी कवि पंत टैगोर के प्रकृतिवाद से प्रभावित थे। इसलिए उनकी प्रारंभिक रचनाओं में इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। जैसे शांतिनिकेतन टैगोर के प्रकृतिवादी विचार को पनपने में ज्यादा असरदार साबित होता है, वैसे उत्तराखंड का कौसानी क्षेत्र पंत को प्रकृति संबंधी कविता सृजन के लिए मदद करती रही। प्रकृतिवाद के अनुसार मनुष्य विकास की प्रेरणा प्रकृति से ग्रहण करता है। यहां पंत इस बात को खुद स्वीकार करते हुए कहते हैं –''कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है; जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है।''[4] अर्थात् कौसानी प्रदेश के प्राकृतिक तत्वों से शिक्षा ग्रहण कर उनका जीवन दर्शन प्रभावित होता है। इसलिए वे कहते हैं ''सौंदर्य के अनेक सद्यः स्फुट उपकरणों से प्रकृति की मनोरमा मूर्ति रचकर मेरी कल्पना समय–समय पर उसे काव्य मंदिर में प्रतिष्ठित करती रही है।''[5]

प्रकृतिवादियों का मानना है कि प्रकृति मनुष्य के लिए एक शिक्षक की भांति है। प्रकृति रूपी शिक्षक से प्राप्त शिक्षा सर्वोत्कृष्ट है। टैगोर के इस विचारधारा से प्रभावित पंत ने भी प्रकृति को अपनी शिक्षिका मानी है। पंत ने प्रकृति से कब–कहां और कैसे शिक्षा ग्रहण की है, उसकी जानकारी अपने काव्यों में दी है। रात के

समय जब चराचर जगत शांत रहती है, तब प्रकृति अपनी साधना में लीन रहती है और अपना विकास करती है। पंत का कवि मन प्रकृति की इस अद्भुत क्रिया से प्रेरणा प्राप्त कर मनुष्य समाज को संसार की स्तब्धता के बीच अपना कर्म की ओर प्रवृत्त होने का संदेश दिया है –

''उठ रे, उद्यत हो अज्ञात!
स्तब्ध हुआ है सब संसार,
इस नीरवता से तू कर ले
अपने साधन का श्रृंगार,
यह सुहाग की है प्रिय रात!..... वह भविष्य होवे अवदान!''[6]

कवि ने संसार की नीरवता में अपने कर्म में लिप्त होने की दशा को सुहाग रात सादृश्य सुख की कल्पना की है एवं भविष्य में इस समय की मेहनत का सुखद परीणाम का जिक्र किया है। भारतीय दार्शनिक 'ओशो' ने भी नीरवता नाद को सुनने की बात कही है –''नीरवत (साइलेंस) में से, जो स्वयं शांति है, एक गूंजती हुई वाणी प्रकट होगी।''[7] ओशो ने भी नीरवता को साधना के लिए उत्तम समय माना है। ओशो के विचार एवं पंत की कविता में नीरवता की जो विशेषताएं वर्णित हैं उसका मूलस्रोत प्रकृति ही है।

पंत ने नदी से जीवन संग्राम में सरल, सत्य तथा उतार–चढ़ाव की जिंदगी में ईमानदारी के पथ पर अग्रसर होने की शिक्षा प्राप्त की है। नदी अपनी राह खुद ढूंढ लेती है और अपना लक्ष्य निर्धारित करके अवाध गति से बढ़ती रहती है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य की भलाई उसी में है कि वह अपने जीवन पथ के लक्ष्य तय कर सच्ची निष्ठा से उसी ओर अनवरत बढ़ता रहे। पंत यहां नदी से जीवन रूपी गीत सीखने की वकालत करते हैं –

''मैं भी उससे गीत सीखने
आज गयी थी उसके पास,
उसके कैसे मृदुल भाव हैं ?
उज्ज्वल तन, मन भी उज्ज्वल!''[8]

नदी का चंचल एवं सरल स्वभाव का वर्णन करते हुए कवि यह सीख प्राप्त करता है कि हमारे जीवन लक्ष्य चाहे जितना बड़ा और अज्ञात हो फिर भी सच्ची ईमानदारी से निस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते हुए नदी की भांति आगे बढ़ते रहना है। कवि यहां नदी का कर्मयोग से अभिभूत है। पंत उस कर्मयोग का ज़िक्र कर रहे हैं जो 'भगवद्गीता' में उल्लेख है। 'भगवद्गीता' में कृष्ण के अनुसार ''कर्मयोग दूसरों के लाभ के लिए किए गए निस्वार्थ कार्य की आध्यात्मिक प्रथा है।''[9] अर्थात् सफलता या विफलता की परवाह किए बिना निस्वार्थ अविरल प्रयास करना है। इसलिए कवि कहता है कि –

''एक ग्रंथि भी नहीं पड़ी है
उसके सरल मृदुल उर में
उसका कैसा कर्मयोग है,
वह चंचल है, या अविचल?''[10]

पंत नदी से निस्वार्थ कर्मयोग की शिक्षा प्राप्त कर मनुष्य समाज को भी उस प्रकृति के आत्मभाव से जोड़ने का प्रयास किया है। पर्वत अपना हृदय में झरना की धारा को बहन कर विशाल धरा पृष्ठ की प्यास बुझाता है तथा संसार को त्याग की भावना का संदेश प्रदान करता है। कवि इस संदेश को कविता के माध्यम से लोगों तक फैला रहा है –

''निर्झर की अजस्र झर–झर!
आओ, मन! नव पाठ सीख लो.....
छिपा स्वार्थ में सुखमय त्याग।''[11]

पंत प्रकृति की छोटी सी चीज़ से भी शिक्षा ग्रहण करते हैं। कलिका वन की शुष्क डाली पर मुरझाती हुई खिलती रहती है और मनुष्य समाज को निराशावाद से आशावाद की ओर ले जाने की प्रेरणा देती है। अर्थात् कवि कलिका के माध्यम से दुःख को भी हंस कर सहन करने की बात करता है। मनुष्य अपने दुःख के समय टूट जाता है और अपनी सूझ–बुझ खो देता है। ऐसे में कवि वन के शुष्क कलिका से प्रेरणा ग्रहण कर हिम्मत से काम करने की सलाह देता हुआ कहता है –

''वन की सूनी डाली पर
सीखा कलि ने मुसकाना
मैं सीख न पाया अब तक
सुख से दुःख को अपनाना।''[12]

उक्त कविता में प्रकृतिवाद के साथ–साथ अरविंद दर्शन का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। अरविंद अपने दर्शन में मानस का अतिमानस में पूर्ण विकास का जिक्र करके हर परिस्थिति में मनुष्य को एक समान व्यवहार करने का उपदेश दिए हैं। कवि पंत प्रकृति के विभिन्न रूपों के प्रति अपनी जिज्ञासा प्रकट किया है। कभी कलि और नदी से तो कभी तितली एवं जुगनू के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। तितलियों के गान को कवि मनुष्य के मृदु संभाषण के साथ जोड़कर कहता है कि मनुष्य का वचन ऐसा होना चाहिए जो सुनने में मधुर और सुखद हो। इसकी शिक्षा कवि मधुप से ग्रहण करता है –

''सिखा दो न, हे मधुर कुमारि!
मुझे भी अपने मीठे गान, ...।''[13]

मनुष्य के वचन के उपरांत कवि प्रकृति से मनुष्य का स्वभाव की सीख ग्रहण करता है। मनुष्य अपना जीवन मधुकर जैसा बिताना चहिए; जैसे मधुकर दिन–रात के कठोर श्रम के पश्चात भी अपना कोमल हृदय से सब में प्रेम की भावना का संचार करता है। उसी प्रकार मनुष्य को चाहिए कि वह अपना कर्म में संलग्न होकर अपने पद, मर्यादा, कुल का ख्याल रखकर अहंकार का विसर्जन करे। वह व्यक्तिनिष्ठ में सीमित न रहकर समाजनिष्ठ बने। मनुष्य का स्वभाव मानव सेवा का कल्याण के अनुरूप होना चहिए। मनुष्य का यह उत्तम मानवीय स्वभाव प्रकृति के आंगन में ही संभव है। प्रसाद ने अपनी 'कामायनी' में प्रकृति को नारी तथा शक्ति मानी है परंतु पंत ने उसमें शक्ति के साथ–साथ एक शिक्षक तथा गुरु का भी दर्शन किया है। प्रकृति के समस्त कार्य समयानुसार होते हैं, समय पर बारिश होती है, समय पर वृक्ष से पत्ते गिरते हैं और नूतन किसलय भी धारण करते हैं। इसी प्रकार भौतिक समाज में भी मनुष्य समय पर जन्म लेता है और अपना कर्म समाप्त कर समय पर मृत्यु प्राप्त करता है। प्रकृति के इन तमाम गतिविधियों को लेकर पंत की कविता का भवन निर्मित है, जिसके ऊपर टैगोर की प्रकृतिवाद रूपी छत आच्छादित है।

निष्कर्ष

पंत के प्रारंभिक काव्य संग्रहों में उनकी ऐसी कविताएं उपलब्ध हैं, जहां रवींद्रनाथ टैगोर का प्रकृतिवाद दर्शन का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। पंत प्रकृति के हर एक तत्व से शिक्षा ग्रहण करते नज़र आते हैं। मनुष्य का स्वभाव, शारीरिक तथा मानसिक विकास में प्राकृतिक परिवेश के योगदान पर विश्वास करते हैं। उन्होंने प्रकृति के धूल भरे आंचल के बीच उत्तम मानवीय गुणों की शिक्षा की कल्पना की है एवं प्रकृति की आत्मा के साथ मनुष्य का शिक्षणपरक मन का तादात्म्य स्थापित किया है। एक आदर्श जीवन जीने के लिए जिस जीवनी शिक्षा की जरूरत होती उन्होंने वह प्रकृति से प्राप्त की है। अतः उनकी कविता टैगोर के प्रकृतिवाद के ज्यादा करीब मालूम पड़ती है।

संदर्भ सूची

1. Jean-jacques Rousseau, Emile, Dover Publication, 2013
2. Nature, freedom and pedagogy - A Comparative Analysis of Rousseau and Tagore, Dr. Ayanita Banerjee, Global Journal of Human Social Science, Volume 21, Year 2021, Online ISSN: 2249-460X
3. सुमित्रानंदन पंत, उत्तरा की प्रस्तावना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.22
4. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 6, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, द्वितीय संस्करण, पृ. सं. 177
5. सुमित्रानंदन पंत, रश्मिबंध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1958, पृ. सं. 8
6. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 1, वीणा, कविता 13, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, द्वितीय संस्करण, पृ. सं. 88
7. ओशो, साधना–सूत्र आत्मा का कमल, डायमंड पॉकेट बुक्स, 2012, पृ. सं. 23
8. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 1, वीणा, कविता 28, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, द्वितीय संस्करण, पृ. सं. 96
9. जेफरी ब्रोड, विश्व धर्म खोज की एक यात्रा, सेंट मैरी प्रेस, 2009, पृ. सं. 53–54, आईएसबीएन 978–0–88489–997–6
10. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 1, वीणा, कविता 28, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, द्वितीय संस्करण, पृ. सं. 96
11. वही, कविता 34, पृ. सं. 99
12. वही, गुंजन, कविता 8, पृ. सं. 243
13. वही, पल्लव, मधुकरी, पृ. सं. 191